गरवी गुजरात

PRGI No. GUJHIN/2011/39228

गरवी गुजरात

PUBLISHED HINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 16
अंक : 040
दि. 09.06.2026,
मंगलवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

एनसीपी का रणनीतिक दांव: राज्यसभा के लिए राजेंद्र जैन पर भरोसा, भुजबल की उम्मीदों को झटका

मुंबई। महाराष्ट्र की राजनीति में राज्यसभा की एक रिक्त सीट को लेकर पिछले कई दिनों से चल रही अटकलों पर सोमवार को विराम लग गया, जब राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) ने पूर्व विधान परिषद सदस्य राजेंद्र जैन को अपना आधिकारिक उम्मीदवार घोषित करते हुए उनका नामांकन दाखिल करा दिया। नामांकन के साथ ही यह लगभग स्पष्ट हो गया है कि राजेंद्र जैन जल्द ही संसद के उच्च सदन में पहुंचने वाले हैं। महाविकास आघाड़ी की ओर से अंतिम समय तक किसी उम्मीदवार को मैदान में नहीं उतारे जाने के कारण उनका निर्विरोध निर्वाचित होना लगभग तय माना जा रहा है। निर्वाचन आयोग द्वारा इसकी औपचारिक घोषणा 18 जून को किए जाने की संभावना है।

विधान भवन में नामांकन दाखिल करने के दौरान राजनीतिक शक्ति प्रदर्शन का भी नजारा देखने को मिला। इस अवसर पर एनसीपी के वरिष्ठ नेता प्रफुल्ल पटेल, मंत्री छगन भुजबल, प्रदेश अध्यक्ष सुनील तटकरे तथा भाजपा नेता आशीष शेलार सहित महायुति गठबंधन के कई प्रमुख नेता उपस्थित रहे। नेताओं की मौजूदगी ने यह संकेत दिया कि राजेंद्र जैन की उम्मीदवारी केवल एक व्यक्ति का चयन नहीं, बल्कि महायुति और एनसीपी नेतृत्व की एक सोची-समझी राजनीतिक रणनीति का हिस्सा है।

राजनीतिक गलियारों में राजेंद्र जैन को लंबे समय से एनसीपी के वरिष्ठ नेता प्रफुल्ल पटेल के सबसे विश्वसनीय

सहयोगियों में गिना जाता रहा है। संगठनात्मक गतिविधियों से लेकर चुनावी रणनीतियों तक, वे लंबे समय से पार्टी के महत्वपूर्ण निर्णयों में सक्रिय भूमिका निभाते रहे हैं। यही कारण है कि पार्टी के भीतर उन्हें एक अनुभवी और भरोसेमंद संगठनकर्ता के रूप में देखा जाता है। राज्यसभा के लिए उनका चयन इस बात का संकेत माना जा रहा है कि पार्टी नेतृत्व ने अनुभव, संगठन के प्रति निष्ठा और राजनीतिक संतुलन को प्राथमिकता दी है।

यह सीट उस समय रिक्त हुई थी जब उपमुख्यमंत्री सुनेत्रा पवार ने राज्यसभा की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया था। सुनेत्रा पवार जून 2024 में महाराष्ट्र से राज्यसभा सदस्य निर्वाचित हुई थीं और उनका कार्यकाल जुलाई 2028 तक था। हालांकि राज्य सरकार में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिलने के बाद उन्होंने मई 2026 में उच्च सदन की सदस्यता छोड़ दी थी। अब इस सीट पर निर्वाचित होने वाले राजेंद्र जैन भी शेष कार्यकाल अर्थात जुलाई 2028 तक राज्यसभा सदस्य रहेंगे। राज्यसभा उम्मीदवार के चयन की प्रक्रिया को लेकर पार्टी के भीतर गहन मंथन हुआ था। सूत्रों के अनुसार रविवार देर रात उपमुख्यमंत्री सुनेत्रा पवार के सरकारी आवास 'देवगिरि' में एनसीपी की कोर कमेटी की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई थी। इस बैठक में राज्यसभा सीट को लेकर कई नामों पर चर्चा हुई। राजनीतिक हलकों में लंबे समय से यह चर्चा थी कि वरिष्ठ ओबीसी नेता और मंत्री छगन भुजबल को राज्यसभा भेजा जा सकता है। इसी पृष्ठभूमि में बैठक के दौरान भुजबल ने स्वयं को राज्यसभा के लिए उम्मीदवार बनाए जाने का प्रस्ताव रखा।

सूत्रों के अनुसार उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि यदि उन्हें राज्यसभा भेजा जाता है तो उनके भतीजे और पूर्व सांसद समीर भुजबल को राज्य मंत्रिमंडल में शामिल किया जा सकता है। हालांकि इस प्रस्ताव को लेकर कोर कमेटी में सहमति नहीं बन सकी। बताया जाता है कि बैठक में मौजूद कई नेताओं ने इस पर आपत्ति जताई और आशंका व्यक्त की कि ऐसा निर्णय पार्टी की सार्वजनिक छवि को प्रभावित कर सकता है।

पार्टी नेतृत्व के सामने सबसे बड़ी चिंता यह थी कि एक ही परिवार के दो सदस्यों को एक साथ महत्वपूर्ण राजनीतिक अवसर देने पर विपक्ष परिवारवाद का मुद्दा उठा सकता है। हाल के वर्षों में भारतीय राजनीति में परिवारवाद को लेकर लगातार बहस होती रही है और विभिन्न दलों पर इस तरह के आरोप लगते रहे हैं। ऐसे में एनसीपी नेतृत्व कोई ऐसा संदेश नहीं देना चाहता था जिससे संगठन के भीतर असंतोष पैदा हो या जनता के बीच नकारात्मक धारणा बने।

सूत्रों के मुताबिक बैठक में यह भी राय सामने आई कि संगठन के लिए वर्षों से काम कर रहे सामान्य कार्यकर्ताओं और नेताओं को भी आगे बढ़ने का अवसर मिलना चाहिए। इसी सोच के तहत नेतृत्व ने ऐसे चेहरे को प्राथमिकता देने का निर्णय लिया जो लंबे समय से संगठन में सक्रिय रहा हो और जिसकी स्वीकार्यता विभिन्न स्तरों पर हो। राजेंद्र जैन का नाम इसी संदर्भ में सबसे उपयुक्त माना गया। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह निर्णय केवल एक राज्यसभा सीट भरने का मामला नहीं है, बल्कि एनसीपी के भीतर शक्ति संतुलन बनाए रखने की कवायद भी है। पार्टी नेतृत्व ने एक ओर वरिष्ठ नेता छगन भुजबल की भूमिका और महत्व को बनाए रखने का प्रयास किया है, वहीं दूसरी ओर संगठन में यह संदेश भी दिया है कि केवल पारिवारिक या व्यक्तिगत दावेदारी के आधार पर महत्वपूर्ण पद नहीं दिए जाएंगे।

महायुति के भीतर भी इस निर्णय को सकारात्मक संकेत के रूप में देखा जा रहा है। गठबंधन के सहयोगी दलों के लिए यह संदेश महत्वपूर्ण माना जा रहा है कि एनसीपी अपने संगठनात्मक ढांचे और राजनीतिक समीकरणों को ध्यान में रखते हुए निर्णय ले रही है। इससे गठबंधन के भीतर समन्वय और संतुलन बनाए रखने में भी मदद मिलने की संभावना है। राजेंद्र जैन का राजनीतिक सफर संगठनात्मक कार्यों से शुरू होकर विधान परिषद तक पहुंचा है। वे लंबे समय से पार्टी के विभिन्न कार्यक्रमों और चुनावी अभियानों में सक्रिय रहे हैं। राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि राज्यसभा में उनकी मौजूदगी पार्टी को संगठनात्मक और रणनीतिक दोनों स्तरों पर लाभ पहुंचा सकती है। संसद के उच्च सदन में वे महाराष्ट्र और पार्टी से जुड़े विभिन्न मुद्दों को प्रभावी ढंग से उठाने की भूमिका निभा सकते हैं। अब सभी की निगाहें 18 जून पर टिकी हैं, जब निर्वाचन आयोग राज्यसभा चुनाव की औपचारिक प्रक्रिया पूरी करेगा। यदि तब तक कोई अन्य उम्मीदवार मैदान में नहीं आता है तो राजेंद्र जैन का निर्विरोध निर्वाचन तय माना जा रहा है।

अशोक जिरावाला के एसजीसीसीआई अध्यक्ष बनने से वस्त्र उद्योग और व्यापार जगत में खुशी की लहर दौड़ गई है

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। सूरत के कपड़ा बाजार, राजनीति और सामाजिक हलकों में एक जाना-पहचाना नाम अशोक जीरावाला को सर्वसम्मति से दक्षिण गुजरात चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज (एसजीसीसीआई) का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है, जिससे कपड़ा बाजार समेत उनके मित्रों के बीच खुशी की लहर दौड़ गई है।

अब आइए वाणिज्य मंडल के कार्यों पर एक नज़र डालते हैं। यह उद्योग जगत को सूचित रखने और उसकी समस्याओं से अवगत कराकर उसकी सहायता करने के लिए भी उत्तरदायी है। इसे उद्योगों, निर्यात और व्यापार में गैस संबंधी मुद्दों पर सरकार से चर्चा करनी होती है और भारत सहित अन्य देशों में उद्योग से संबंधित नई आर्थिक नीतियों पर वैश्विक स्तर पर विचार-विमर्श करना होता है।

आइए यहां अशोक जीरावाला के बारे में बात करते हैं, जो चैंबर के अध्यक्ष चुने गए हैं और जिनका मुख्य व्यवसाय वस्त्र उद्योग है। यानी उनका वस्त्र बाजार से सीधा संबंध है और इसी वजह से अशोक जीरावाला अपने हंसमुख और खुले स्वभाव के लिए भी जाने जाते हैं, जिसकी वजह से वस्त्र बाजार के व्यापारियों में उनकी अच्छी प्रतिष्ठा है। ये अशोक जीरावाला मूल रूप से सौराष्ट्र के निवासी हैं, यानी काठियावाड़ के निवासी, यानी सौराष्ट्र पाटीदार समुदाय से हैं। वे (अशोकभाई) 2011 में सूरत नगर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए थे और संगठन को मजबूत करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। उनके अनुभव

की बात करें तो वे 1982 में सेवा दल के सदस्य थे। 1985 में वे युवा कांग्रेस के कार्यकारी सदस्य भी रहे। इसके अलावा, वे 1994 से 2002 तक सूरत जिला युवा कांग्रेस के उपाध्यक्ष भी रहे और उन्होंने अच्छा काम किया। वे वर्तमान में विभिन्न संगठनों से जुड़े हुए हैं। जैसे कि फेडरेशन गुजरात वीवर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष, वराछा कपोदरा वीवर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष, योगा स्पोर्ट्स एंड एडवेंचर एसोसिएशन के ट्रस्टी। वर्तमान की बात करें तो, 2025 से 2026 तक, 23 अप्रैल 2026 को उन्होंने मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल से व्यक्तिगत रूप से मुलाकात की और उद्योगों में गैस आपूर्ति पर चर्चा की। उन्होंने पीएम मित्रा पार्क पर भी बात की। 25 अप्रैल 2026 को उन्होंने मध्य पूर्व पर भाषण दिया और नए वैश्विक बाजार के बारे में चर्चा की। 30 अप्रैल 2026 को भारत-ब्रिटेन मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) के सेमिनार में कहा गया कि सूरत टेक्सटाइल्स को ब्रिटेन के बाजार में लाभ होगा। 1 सितंबर 2025 को जब गुजरात के वित्त मंत्री से मुलाकात कर जी.आई.सी.डी., आईटीसी रिफंड और कपड़ा सब्सिडी की मांग करके उद्योग को जीवित रखने का प्रयास करने वाले अशोक जीरावाला को चैंबर ऑफ कॉमर्स का अध्यक्ष चुना गया, तो उनके करीबी मित्र और मीडिया जगत से जुड़े एक सामाजिक संगठन के सदस्य छगनलाल मेवाड़ा ने उन्हें पगड़ी पहनाकर और फूलों का गुलदस्ता भेंट करके बधाई दी। इसके साथ ही, रविराज देसाई को चैंबर ऑफ कॉमर्स का उपाध्यक्ष, परेशभाई लाठिया को सचिव और अतुलभाई पटेल को कोषाध्यक्ष चुना गया। छगनलाल मेवाड़ा की ओर से इन सभी को बधाई दी गई।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कच्छ के सड़क मार्गों को फोर लेन बनाने के लिए 629 करोड़ रुपए मंजूर किए

ग्रामीण क्षेत्रों को सुदृढ़ रोड कनेक्टिविटी मिलने से ईज ऑफ लिविंग तथा पर्यटन क्षेत्र का अधिक विकास होगा

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने राज्य के अति महत्वपूर्ण सड़क मार्गों को फोर लेन के रूप में विकसित करने का दृष्टिकोण अपनाया है। इस संदर्भ में; मुख्यमंत्री ने कच्छ जिले के 6 सड़क मार्गों को फोर लेन करने के लिए 629 करोड़ रुपए मंजूर किए हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कच्छ जिले के ग्रामीण क्षेत्रों को सुदृढ़ रोड कनेक्टिविटी उपलब्ध कराने की जन हितकारी मंशा के साथ इन सड़क मार्गों को चार मार्गीय करने के लिए वित्तीय आवंटन किया है। इसमें मुंद्रा-लुणी-वडाला रोड के 4.1 किलोमीटर, वाइडनिंग तथा

इम्प्रूवमेंट ऑफ देशलपर सिरचा रोड 5.1 किलोमीटर, मुंद्रा-झरपरा-कांडगरा-ध्रब तथा झरपरा गाँव के बाईपास रोड के 5.5 किलोमीटर, नावीनल गाँव के बाईपास रोड के 3.3 किलोमीटर, मोटा कांडगरा गाँव के 4.5 किलोमीटर और मुंद्रा-झरपरा-कांडगरा रोड चेनेज 19 से 39 के 20 के किलोमीटर का समावेश होता है।

फोर लेन बनने के परिणामस्वरूप ये सड़क मार्ग ग्रामीणों के लिए महत्वपूर्ण एवं सुविधायुक्त बनेंगे। इतना ही नहीं; बाईपास बनने से मुंद्रा बंदरगाह तथा आसपास के छोटे-बड़े औद्योगिक-वाणिज्यक क्षेत्रों में आवागमन करने वाले भारी वाहन तेजी से और सुरक्षित माल परिवहन कर सकेंगे।

इन सड़क मार्गों का विकास होने से कच्छ में पर्यटन क्षेत्र को भी अधिक बल मिलेगा और लोगों का ईज ऑफ लिविंग भी बढ़ेगा।

दहेज अदाणी पोर्ट साइडिंग से लातूर के लिए पहली उर्वरक रेक लोडिंग, वडोदरा मंडल की ऐतिहासिक उपलब्धि

पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल ने माल परिवहन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए दहेज अदाणी पोर्ट साइडिंग से लातूर के लिए पहली मिनी बीसीएन (BCN) उर्वरक रेक का सफल लदान किया। दहेज अदाणी पोर्ट साइडिंग अब तक मुख्य रूप से कोयला लदान केंद्र के रूप में जानी जाती रही है। ऐसे में यहां से पहली बार उर्वरक की लोडिंग होना मंडल के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके के कुशल नेतृत्व में यह कदम उपलब्ध अवसंरचना के अधिकतम उपयोग तथा नए माल यातायात को आकर्षित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस उपलब्धि की नींव दिसंबर 2025 में मंडल

रेल प्रबंधक श्री राजू भडके के साइडिंग निरीक्षण के दौरान रखी गई थी। उन्होंने निरीक्षण के दौरान साइडिंग की क्षमता का बेहतर उपयोग करते हुए नए प्रकार के माल यातायात को आकर्षित करने पर विस्तृत चर्चा की। इसी क्रम में कोयला साइडिंग से उर्वरक लदान शुरू करने का निर्णय लिया गया, जिसने आज वास्तविक रूप ले लिया।

पश्चिम रेलवे के जनसंपर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार 04 जून 2026 को दहेज अदाणी पोर्ट से लातूर के लिए प्रेषित इस पहली उर्वरक रेक में 21 वैगनों वाली एक मिनी बीसीएन (BCN) उर्वरक रेक का उपयोग किया गया। यह रेक लगभग 926 किलोमीटर की दूरी तय करेगी तथा इस परिवहन से मंडल रेलवे को लगभग 20.54 लाख का मालभाड़ा राजस्व प्राप्त होगा। आयातित उर्वरक की यह खेप कृषि क्षेत्र की आवश्यकताओं को समयबद्ध एवं सुरक्षित रूप से पूरा करने में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

लातूर के लिए पहली उर्वरक रेक का सफल प्रेषण न केवल वडोदरा मंडल की व्यावसायिक दूरदृष्टि और नवाचार को दर्शाता है, बल्कि यह भी सिद्ध करता है कि मौजूदा रेलवे परिसंपत्तियों का उपयोग कर नए व्यापारिक अवसरों का सृजन किया जा सकता है। यह उपलब्धि दहेज अदाणी पोर्ट साइडिंग के लिए एक नई शुरुआत है और भविष्य में विभिन्न प्रकार के माल यातायात को आकर्षित करने की असीम संभावनाओं के द्वार खोलती है।

वडोदरा मंडल ग्राहकों को बेहतर माल परिवहन सेवाएं प्रदान करने, परिचालन दक्षता बढ़ाने तथा रेलवे के माल व्यवसाय को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण

विकसित भारत का अमृतकाल : 'विकसित भारत@2047' के संकल्प के साथ आत्मनिर्भर भारत की दिशा में आगे बढ़ता देश

गांधीनगर : 26 मई, 2014 को श्री नरेन्द्र मोदी ने पहली बार देश के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली थी। भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लक्ष्य के साथ आगे बढ़ रहे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को देश की जनता का अभूतपूर्व समर्थन मिला और वर्ष 2024 में उन्होंने लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री के रूप में कार्यभार संभाला। 26 मई, 2026 को प्रधानमंत्री के रूप में उनके कार्यकाल के 12 वर्ष पूर्ण हुए हैं।

गत 12 वर्षों में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दिशादर्शन में भारत ने विकास, सुशासन, गरीब कल्याण और वैश्विक प्रतिष्ठा के नए अध्याय लिखे हैं। प्रधानमंत्री के दृढ़ नेतृत्व तथा दूरदर्शी विचारधारा से भारत ने एक नई दिशा प्राप्त की है। उन्होंने 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' के मंत्र को प्राथमिकता दी है और वे 'विकसित भारत@2047' के संकल्प के साथ आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। प्रधानमंत्री के रूप में उनके इन 12 वर्षों के कार्यकाल के दौरान देश ने

इन्फ्रास्ट्रक्चर, टेक्नोलॉजी, ऊर्जा, उत्पादन, खेलकूद तथा सामाजिक सुधार जैसे अनेक क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात राज्य देश की इस विकास यात्रा में अग्रसर रहकर 'विकसित गुजरात से विकसित भारत' के संकल्प को साकार करने के लिए प्रतिबद्ध है। गुजरात आज केवल औद्योगिक राज्य के रूप में ही नहीं; बल्कि नवाचार, हरित ऊर्जा, सेमीकंडक्टर उत्पादन, वैश्विक निवेश एवं आधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर का केन्द्र बनकर में उभरा है। गत 12 वर्षों में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के केन्द्रीय नेतृत्व अंतर्गत गुजरात ने विकास, नवाचार एवं प्रगति का एक अनूठा मॉडल स्थापित किया है, जो आज समग्र देश के लिए प्रेरणारूपी बना है।

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में गुजरात द्वारा प्राप्त की गई बड़ी भेंट

प्रधानमंत्री के रूप में कार्यभार संभालने के मात्र 17 दिनों में श्री नरेन्द्र मोदी ने सरदार सरोवर बांध पर दरवाजे लगाने की मंजूरी देकर गुजरात के करोड़ों लोगों का वर्षों पुराना सपना साकार किया। आज सरदार सरोवर बांध अपने पूर्ण जल स्तर तक पहुँचकर छलक रहा है। भारत सरकार के स्मार्ट सिटी मिशन अंतर्गत गुजरात के 6 शहरों अहमदाबाद, सूरत, वडोदरा, राजकोट, गांधीनगर तथा दाहोद का अभूतपूर्व विकास हुआ है। गुजरात के अहमदाबाद शहर तथा महाराष्ट्र के मुंबई शहर को तीव्र गति से कनेक्ट करने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात की जनता को बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट की भेंट दी है। इसके अतिरिक्त; जामनगर में ग्लोबल सेंटर फॉर ट्रेडिशनल मेडिसीन, राजकोट में हीरासर स्थित प्रथम ग्रीनफील्ड एयरपोर्ट, अत्याधुनिक सुविधाओं वाला राजकोट एम्स अस्पताल, नवसारी में पीएम मित्र पार्क, भरूच में बल्क ड्रग पार्क, कच्छ के खावडा में विश्व का सबसे बड़ा हाइब्रिड रिन्यूएबल एनर्जी पार्क, दाहोद में इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव इंजन उत्पादन इकाई, वडोदरा में टाटा फैसिलिटी सी-295 एयरक्राफ्ट का उत्पादन करने के लिए टाटा एयरक्राफ्ट कॉम्प्लेक्स, भावनगर में विश्व का प्रथम सीएनजी टर्मिनल पोर्ट, द्वारका तथा बेट द्वारका को जोड़ने वाला अत्याधुनिक सिग्नेचर ब्रिज सुदर्शन सेतु, साणंद में माइक्रोन सेमीकंडक्टर फैसिलिटी और 'केन्स सेमीकॉन' ओएसएटी प्लांट का शुभारंभ आदि जैसी परियोजनाओं की गुजरात को भेंट मिली है। गुजरात आज भारत के सेमीकंडक्टर हब के रूप में उभर रहा है।

उनके सुदृढ़ नेतृत्व में गुजरात में रेलवे कनेक्टिविटी भी मजबूत बनी है। बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट के अतिरिक्त; प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्टैच्यू ऑफ यूनिटी तक पर्यटक आसानी से पहुँच सकें; इसके लिए केवडिया तक रेलवे कनेक्टिविटी प्रदान की है। आज भारतीय रेलवे की 8 ट्रेनें केवडिया तक के रूट पर चल रही हैं। सितंबर, 2022 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात को प्रथम वंदे भारत ट्रेन की भेंट दी थी। हाल में गुजरात में पाँच वंदे भारत सेमी हाईस्पीड ट्रेनें चल रही हैं। इसके अलावा; भुज तथा अहमदाबाद के बीच नमो भारत रैपिड रेल की भेंट भी गुजरात को मिली है। प्रधानमंत्री ने गुजरात में अहमदाबाद मेट्रो और सूरत मेट्रो परियोजना की भेंट दी है। आज अहमदाबाद तथा गांधीनगर में सफलतापूर्वक मेट्रो रेल चल रही है, जो नागरिकों को सुगम परिवहन सुविधा प्रदान कर रही है। गुजरात आज केवल देश के औद्योगिक राज्य के रूप में ही नहीं; बल्कि नवाचार, हरित ऊर्जा, सेमीकंडक्टर उत्पादन, वैश्विक निवेश तथा आधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर के केन्द्र के रूप में उभरा है। गुजरात ग्रीन एनर्जी, मैन्युफैक्चरिंग, लॉजिस्टिक्स, फाइनेंस तथा टेक्नोलॉजी क्षेत्र में देश का नेतृत्व कर रहा है। गत 12 वर्षों में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के केन्द्रीय नेतृत्व में गुजरात ने विकास, नवाचार और प्रगति का एक अनूठा मॉडल स्थापित किया है।

गुजरात में 'विकास भी, विरासत भी' का मंत्र हो रहा है चरितार्थ

सोमनाथ मंदिर पर हुए प्रथम आक्रमण के 1000 वर्ष पूर्ण होने के ऐतिहासिक अवसर पर नरेन्द्रभाई ने जनवरी 2026 में सोमनाथ स्वाभिमान पर्व का आयोजन किया था। सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के माध्यम से केवल मंदिर के इतिहास का स्मरण ही नहीं किया गया; अपितु राष्ट्र के स्वाभिमान, संघर्ष एवं पुनरुत्थान की भावना को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का प्रयास हुआ है।

संपादकीय

प्रतिरोध के तेवर

मुख्य न्यायाधीश की कॉकरोच वाली टिप्पणी के प्रतिरोध में व्यंग्यात्मक रूप में अस्तित्व में आई कॉकरोच जनता पार्टी ने आखिरकार आभासी दुनिया से निकलकर दिल्ली के जंतर-मंतर पर दस्तक दे ही दी। पार्टी के संस्थापक अभिजीत दीपके के दिल्ली पहुंचने और हजारों युवाओं की भागीदारी के बाद शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की मांग के साथ प्रदर्शन समाप्त हो गया। सीजेपी का आरोप है कि नीट परीक्षा रद्द होने के बाद कई छात्रों ने आत्महत्या की है। पिछले दिनों सीजेआई द्वारा 'फेक डिग्री वाले युवाओं' की तुलना कॉकरोच से करने के बाद ऑनलाइन व्यंग्यात्मक आंदोलन के जमीन पर उतरने और विपक्षी दलों के समर्थन ने निश्चय ही सरकार की चिंता बढ़ाई है। ऑनलाइन मूवमेंट को लाखों युवाओं का समर्थन मिलने के बाद सरकार ने पहले सख्ती भी दिखायी थी। जंतर-मंतर के प्रदर्शन के बाद अभिजीत दीपके ने सरकार को सात दिन का समय देने की बात कही। साथ ही इसे महज एक ट्रेलर बताया है। उनकी दलील थी कि यह पार्टी योजनाबद्ध नहीं, स्वतःस्फूर्त पार्टी है और सरकार से नाराज हर छात्र की आवाज बनेगी। पार्टी ने देश में युवाओं को रोजगार न मिलने का आरोप भी लगाया। पार्टी का मानना है कि सरकार शिक्षा व्यवस्था सुधारने में तो नाकाम रही ही है, लेकिन उन परीक्षाओं को भी पारदर्शी ढंग से आयोजित नहीं कर पा रही है, जो देश के लाखों युवाओं का भविष्य तय करते हैं। यह भी कि व्यवस्था की विफलता से लाखों युवाओं के सपने टूटे हैं, जो अब कॉकरोच को प्रतिरोध का प्रतीक बनाकर विरोध जता रहे हैं। राजनीति के पंडित जंतर-मंतर में सीजेपी को प्रदर्शन के लिये अनुमति दिए जाने पर हैरानी जता रहे हैं। उनका मानना है कि पड़ोसी देशों में जेन ज़ी पर हुई सख्ती के बाद उग्र होने वाले आंदोलन सरकार को याद आए हैं, यही वजह है कि उसने कुछ उदारता बरती है। साथ ही यह भी कोशिश है कि देश के लाखों परिवारों से जुड़ा पेपर लीक का गुस्सा किसी तरह शांत हो जाए। यूं तो विषम आर्थिक परिस्थितियों में बेरोजगारी तो बढ़ी है, साथ ही रोजगार देने वाली व्यवस्था की विफलता देश के युवाओं को अशांत कर रही है। वे अपने भविष्य को लेकर खासे चिंतित हैं। इसीलिए शिक्षा और रोजगार देने वाली व्यवस्था का मुद्दा युवाओं को प्रभावित कर रहा है। विपक्षी राजनीतिक दल आरोप लगा रहे हैं कि यह आंदोलन युवा अशांति,जवाबदेही और असहमति की स्वतंत्रता का प्रतीक बन रहा है। तभी युवाओं ने हेय दृष्टि से देखे जाने वाले जीव कॉकरोच यानी तिलचट्टे को जीवटता के प्रतीक के रूप में परिभाषित किया है। यह बताने की कोशिश कि मुश्किल हालात में भी वे अपनी बात को रखते रहेंगे। युवाओं का मानना है कि पार्टी के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर अंकुश लगाना डिजिटल लोकतंत्र को नियंत्रित करने का प्रयास है। युवाओं की मांग है कि स्वस्थ लोकतंत्र की अनिवार्य शर्त असहमति को शांतिपूर्ण ढंग से स्वीकार किया जाए। कहा जा रहा है कि कॉकरोच आंदोलन ने लोकतंत्र के सभी हितधारकों मसलन राजनीतिक वर्ग, नौकरशाही, न्यायपालिका तथा मीडिया को आत्मनिरीक्षण का मौका दिया है।

मेडिकल शिक्षा में आमूल-चूल सुधार की जरुरत

> पेपर लीक मामले के बाद नीट परीक्षा रद्द होने पर इसकी पारदर्शिता , मेडिकल शिक्षा के असमानतापूर्ण ढांचे व प्रक्रिया पर सवाल उठे हैं। जिनमें रट्टे व कोचिंग संस्कृति को बढ़ावा देना व केंद्रीकृत होना आदि प्रमुख हैं। समाधान है इसमें शामिल एनटीए , एनएमसी व मेडिकल कॉलेजों की जवाबदेही तय करना।

भारत का मेडिकल शिक्षा क्षेत्र पूरी तरह से गड़बड़ाया हुआ है। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) ने हाल ही में पेपर लीक होने के बाद राष्ट्रीय प्रवेश एवं योग्यता परीक्षा (नीट) को रद्द कर दिया, जिसका आयोजन उसने मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश के लिए किया था। पिछले साल जुलाई में, सीबीआई ने बड़े पैमाने पर हुए भ्रष्टाचार घोटाले का पर्दाफ़ाश किया था, जिसमें कथित तौर पर कई मेडिकल कॉलेज, स्वास्थ्य मंत्रालय के कई अधिकारी और नेशनल मेडिकल कमीशन (एनएमसी) के अधिकारी शामिल थे। ये घटनाएं संपूर्ण मेडिकल शिक्षा की शुचिता और स्वास्थ्य सेवा की गुणवत्ता पर इसके असर को लेकर गंभीर चिंताएं पैदा करती हैं। इस क्षेत्र में आमूल-चूल बदलाव की ज़रूरत है, न कि सिर्फ़ छोटे-मोटे सुधारों की।

भारत में डॉक्टर बनना मुश्किल प्रक्रिया है। छात्रों को मेडिकल सीट पाने के लिए कड़ी प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है। हाल के वर्षों में सीटों की संख्या में काफ़ी बढ़ोतरी हुई है- फिलहाल 800 कॉलेजों में कुल 1,28,000 एमबीबीएस सीटें उपलब्ध हैं। सरकार की योजना के अनुसार, अगले तीन वर्षों में 50,000 और अंडरग्रेजुएट और पोस्ट-ग्रेजुएट सीटें जोड़ी जाएंगी। फिर भी, प्रतिस्पर्धा काफ़ी ज़्यादा है। रद्द किए गए पिछले नीट में लगभग 22 लाख बच्चों ने हिस्सा लिया था। चयन होने पर, छात्र को मेडिकल कॉलेज में साढ़े पांच वर्ष का प्रशिक्षण व उसके बाद एक और प्रवेश परीक्षा पास करने पर, रेजिडेंसी प्रोग्राम में तीन साल की विशेषज्ञता हासिल करनी होती है।

चूंकि मौजूदा व्यवस्था में एडमिशन के लिए नीट स्कोर ही एकमात्र मापदंड है, इसलिए इस परीक्षा की निष्पक्षता बहुत अहम है। मौजूदा गड़बड़ी के बाद चली बहस में ध्यान का केंद्र एनटीए और इस व्यवस्था की ईमानदारी सुनिश्चित करने पर है। सुझाए गए विभिन्न तकनीकी एवं भौतिक उपायों में कंप्यूटर-आधारित परीक्षा,

'जस्ट-इन-टाइम' एन्क्रिप्टेड प्रश्न पत्र जैसी सुरक्षा प्रणालियां, प्रश्न पत्रों के अनेक सेट और एआई-आधारित रैंडम प्रश्न चयन अपनाना शामिल हैं। साल 2024 में नीट घोटाले के बाद गठित राधाकृष्णन समिति ने भी परीक्षा को निष्पक्ष बनाने को कई सिफ़ारिशें की थीं। ऐसे त्वरित तकनीकी समाधान और परीक्षा पत्रों की भौतिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के उपाय शायद अल्पकाल के लिए मददगार साबित हो सकें। मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश प्रक्रिया में बुनियादी ढांचागत बदलाव करने की ज़रूरत है। कई देशों में अपनाई जाने वाली समग्र मूल्यांकन प्रणाली के उलट भारत में मेडिकल ट्रेनिंग के सभी स्तरों पर प्रवेश मानकीकृत कर दी गई परीक्षा द्वारा तय किया जाता है। मेडिकल ट्रेनिंग के लिए स्कोर आधारित प्रवेश छात्रों की पात्रता का आकलन करने का सर्वोत्तम ढंग नहीं; यह कई मायनों में असमान है। नीट को सेंट्रल बोर्ड ऑफ़ सेकेंडरी एजुकेशन (सीबीएसई) के पाठ्यक्रम के साथ-साथ कुछ ऐसे विषयों के आधार पर तैयार किया गया है जो स्कूल के सिलेबस से बाहर के हैं। जो बच्चे राज्य बोर्ड के सिलेबस वाले गैर-सीबीएसई स्कूलों से आते हैं उन्हें स्वाभाविक रूप से नुकसान होता है।

यहां तक कि सीबीएसई स्कूलों से आने वाले छात्र भी पूरी तरह तैयार नहीं होते, क्योंकि कुछ ऐसे विषय होते हैं जो स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल ही नहीं। इस अंतर को पूरा करने के लिए, दोनों श्रेणी के छात्रों को नीट के लिए किसी न किसी किस्म की तैयारी करनी पड़ती है। इसी वजह से कई अरब डॉलर का कोचिंग उद्योग खड़ा हो गया है। यह अनेक छात्रों के लिए एक और बड़ी बाधा है, क्योंकि हर कोई कोचिंग की ऊंची फीस नहीं दे सकता। यदि वे राज्य शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम वाले स्कूलों से आते हैं और गैर-अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों से हैं, उनके लिए तो दोहरा नुकसान है। शुरुआत के लिए, प्रवेश प्रक्रिया विकेंद्रीकृत की जाना जरूरी है। अलग-अलग शिक्षा प्रणालियों और क्षेत्रीय असमानताओं वाले देश के लिए नीटजैसा 'एक साइज़ सबके लिए' वाला ढंग प्रभावी नहीं। इस किस्म की मानकीकृत मूल्यांकन परीक्षा में सीखने के अलग-अलग माहौल और छात्रों की पृष्ठभूमि को ध्यान में नहीं रखा गया। इसके अलावा, एक केंद्रीकृत प्रणाली में घोटालों, हेरफेर और पेपर लीक की गुंजाइश अधिक होती है, जैसा कि 2024 व 2026 में देखा गया।

राज्यों को स्थानीय कारकों के आधार पर प्रवेश के लिए अपनी प्रक्रिया तय करने दें, वे जो भी प्रक्रिया चुनें, उसकी जवाबदेही और पारदर्शिता भी सुनिश्चित हो। चाहे सरकारी मेडिकल कॉलेजों में एडमिशन के लिए हाई स्कूल के अंकों और प्रवेश परीक्षा स्कोर पर आधारित मिली-जुली प्रणाली हो, या निजी कॉलेजों के लिए अलग पात्रता परीक्षा हो सकती है। राज्यों के कॉलेजों में 'ऑल-इंडिया' कोटे के तहत एडमिशन के लिए अतिरिक्त मानदंड या टेस्ट हो सकते हैं।

मेडिकल एडमिशन टेस्ट की प्रकृति में भी बदलाव ज़रूरी है। फिलहाल, नीट मूलतः जीव विज्ञान, भौतिक विज्ञान और रसायन विज्ञान वाले पाठ्यक्रम की रट्टा आधारित परीक्षा है। इसे चिकित्सा जैसे उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम के लिए तैयारी, योग्यता या शैक्षणिक क्षमता का मूल्यांकन करने के लिए डिज़ाइन नहीं किया गया। जबकि छात्रों का मूल्यांकन अधिकांश उनकी आलोचनात्मक सोच-तर्कशक्ति, समस्या-समाधान कौशल के अलावा व्यावहारिक एवं सामाजिक विज्ञान की कांसेप्ट्स के आधार पर किया जाना चाहिए। पोस्ट-ग्रेजुएट सीटों के लिए भी सिर्फ प्राप्तांक आधारित प्रवेश परीक्षा होना अपर्याप्त है।

नीट का एक अवांछित दुष्प्रभाव कोचिंग उद्योग है, जो नीट-संबंधी हरेक घोटाले में हमेशा शामिल रहा। टेस्ट की प्रकृति और छात्रों की सीखने की अलग-अलग पृष्ठभूमि ने ही इस उद्योग को जन्म दिया। कोचिंग संस्थान दावा करते हैं कि एक औसत हाई स्कूल छात्र को नीट में बेहतर प्रदर्शन के लिए छठी-सातवीं कक्षा से तैयारी शुरू कर देनी चाहिए, जो उसके नीट परीक्षा देने से करीब सात साल पहले का समय है। इसके लिए, वे 'डमी स्कूल' और इंटरमीडिएट कॉलेज बनाते हैं, जहां छात्रों का औपचारिक एडमिशन तो होता है, लेकिन वे ज़्यादातर समय कोचिंग सेंटरों में बिताते हैं। इस प्रकार, कोचिंग उद्योग औपचारिक स्कूली शिक्षा प्रणाली को कमज़ोर कर रहा है, व बच्चों को नीट के 'ज़ॉम्बी' में भी परिवर्तित कर रहे हैं, जिससे वे हाई स्कूल और जूनियर कॉलेज काल के दौरान नैसर्गिक जीवन सीखने के अनुभवों से वंचित हो रहे हैं। ऐसे बच्चे आलोचनात्मक सोच, नैतिकता और संवाद कौशल से वंचित रह जाते हैं- जो उनके कैरियर की राह में, वह जो भी हो, उनके समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए अनिवार्य है। इसके अलावा, कोचिंग का तनाव और माता-पिता की उम्मीदें युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर भारी पड़ रही हैं।

'डमी स्कूलिंग' इसलिए फल-फूल रही है, कि राज्य के शिक्षा विभागों ने इस पर आंखें मूंद रखी हैं। कोचिंग इंडस्ट्री को राज्य सरकारें बढ़ावा देती हैं। राजस्थान में, सरकार वंचित वर्गों के छात्रों को कोचिंग सत्र में शामिल होने के लिए आर्थिक सहायता देती है। सब्सिडी सीधे कोचिंग संस्थानों को ट्रांसफर की जाती है। तेलंगाना सरकार ने नीट और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे छात्रों को स्टडी मेटीरियल और डिजिटल टूल मुहैया करवाने के लिए कोचिंग कंपनियों के साथ अनुबंध किया है। असल में, राज्य सरकारें कोचिंग इंडस्ट्री की मदद कर रही हैं ताकि सीखने की जगह रटने की प्रक्रिया को बढ़ावा दिया जा सके।

हालिया नीट घोटाले ने सरकार को मेडिकल शिक्षा के क्षेत्र में फैली गड़बड़ियों को दुरुस्त करने व सुधार लाने का एक और मौका मुहैया किया है। इसमें शामिल संस्थान-चाहे एनटीए हो, एनएमसी या मेडिकल कॉलेज- इन्हें जवाबदेह, पारदर्शी व भ्रष्टाचार-मुक्त बनाया जाना चाहिए।

प्रेरणा

संतुलित निर्णय ही नेतृत्व की असली पहचान

जीवन में अनेक बार ऐसी परिस्थितियां आती हैं जब व्यक्ति को अपने हित और दूसरों के हित के बीच चुनाव करना पड़ता है। ऐसे क्षणों में लिया गया निर्णय ही उसके चरित्र, बुद्धिमत्ता और नेतृत्व क्षमता को प्रकट करता है। सामान्यतः लोग बुद्धिमत्ता को केवल ज्ञान, शिक्षा या तर्कशक्ति से जोड़कर देखते हैं, लेकिन वास्तविक बुद्धिमत्ता उससे कहीं अधिक व्यापक है। सच्चा बुद्धिमान वही होता है जो परिस्थितियों का सही आकलन कर संतुलित निर्णय ले सके। वह न तो केवल स्वयं के बारे में सोचता है और न ही दूसरों की भलाई के नाम पर अपनी आवश्यकताओं की पूरी तरह उपेक्षा करता है। वह दोनों के बीच ऐसा सामंजस्य स्थापित करता है जिससे सभी का हित संभव हो सके।

एक समृद्ध राज्य में एक अनुभवी वजीर ने लंबे समय तक अपनी सेवाएं देने के बाद पद से अवकाश ग्रहण कर लिया। उसके जाने के बाद राज्य में नए वजीर की नियुक्ति आवश्यक हो गई। बादशाह जानता था कि वजीर का पद केवल प्रशासनिक जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि पूरे राज्य के भविष्य से जुड़ा हुआ है। इसलिए उसने यह सुनिश्चित करने का निर्णय लिया कि इस पद पर केवल वही व्यक्ति नियुक्त हो जो बुद्धिमत्ता, विवेक और संतुलित सोच में सबसे श्रेष्ठ हो।

राज्यभर से अनेक योग्य उम्मीदवारों को बुलाया गया। उनकी शिक्षा, अनुभव, निर्णय क्षमता और प्रशासनिक योग्यता की कठोर परीक्षा ली गई। लंबे चयन के बाद केवल तीन उम्मीदवार अंतिम चरण तक पहुंच सके। अब बादशाह को उनमें से एक को चुनना था। उसने सोचा कि केवल पुस्तकीय ज्ञान या औपचारिक परीक्षा से किसी व्यक्ति की वास्तविक बुद्धिमत्ता का पता नहीं चल सकता। इसलिए उसने एक ऐसा प्रश्न पूछने का निश्चय किया जो उनके सोचने के तरीके और जीवन-दृष्टि को स्पष्ट कर दे। बादशाह ने पहले उम्मीदवार को बुलाया और पूछा, "यदि मेरी और तुम्हारी दाढ़ी में एक साथ आग लग जाए, तो तुम सबसे पहले क्या करोगे?" प्रश्न सुनते ही उम्मीदवार ने बिना किसी विचार के उत्तर दिया, "जहांपनाह, मैं सबसे पहले आपकी दाढ़ी की आग बुझाऊंगा।" उसका उत्तर सुनकर लगा कि वह अपने शासक के प्रति अत्यंत निष्ठावान है। वह अपने राजा को स्वयं से अधिक महत्व देता है। पहली दृष्टि में उसका उत्तर प्रशंसनीय प्रतीत होता था, लेकिन गहराई से विचार करने पर उसमें एक गंभीर कमी दिखाई देती है। यदि उसकी अपनी दाढ़ी भी जल रही है और वह उसकी उपेक्षा करता है, तो वह स्वयं गंभीर हानि उठा सकता है। जो व्यक्ति अपनी सुरक्षा और आवश्यकताओं की पूरी तरह अनदेखी करता है, वह संकट में दूसरों की सहायता भी लंबे समय तक नहीं कर सकता। अतः उसका उत्तर भावनात्मक तो था, लेकिन उसमें व्यावहारिक बुद्धिमत्ता का अभाव था। इसके बाद दूसरे उम्मीदवार को बुलाया गया। उसने प्रश्न सुनकर कहा, "जहांपनाह, मैं सबसे पहले अपनी दाढ़ी की आग बुझाऊंगा।" यह उत्तर पूरी तरह यथार्थवादी था। हर व्यक्ति स्वाभाविक रूप से अपनी सुरक्षा को प्राथमिकता देता है। यदि कोई स्वयं सुरक्षित नहीं रहेगा, तो वह दूसरों की मदद कैसे कर सकेगा? लेकिन इस उत्तर में केवल आत्महित की भावना दिखाई देती थी। उसने बादशाह की स्थिति और सुरक्षा के प्रति कोई चिंता नहीं दिखाई। ऐसा दृष्टिकोण किसी व्यक्ति को स्वार्थी बना सकता है। नेतृत्व के लिए केवल आत्मरक्षा पर्याप्त नहीं होती, बल्कि दूसरों के प्रति उत्तरदायित्व की भावना भी आवश्यक होती है। अब तीसरे उम्मीदवार की बारी आई। उसने कुछ क्षण शांत होकर विचार किया और फिर विनम्रता से उत्तर दिया, "जहांपनाह, मैं एक हाथ से आपकी दाढ़ी की आग बुझाऊंगा और दूसरे हाथ से अपनी दाढ़ी की।" यह उत्तर सुनते ही बादशाह के चेहरे पर संतोष झलक उठा। उसने तुरंत घोषणा कर दी कि यही व्यक्ति नया वजीर बनेगा। दरबार में उपस्थित लोगों को आश्चर्य हुआ कि आखिर इस उत्तर में ऐसा क्या विशेष था। तब बादशाह ने समझाया, "जो अपनी आवश्यकता की उपेक्षा करता है, वह नादान है। जो केवल अपने हित के बारे में सोचता है, वह स्वार्थी है। लेकिन जो अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए दूसरों का भी हित करता है, वही वास्तव में बुद्धिमान होता है।" यह शिक्षा केवल उस दरबार तक सीमित नहीं थी। यह जीवन के हर क्षेत्र में लागू होने वाला सिद्धांत है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह परिवार, समाज और राष्ट्र से जुड़ा हुआ है। यदि वह केवल अपने बारे में सोचेगा, तो उसके संबंध कमजोर हो जाएंगे। यदि वह केवल दूसरों के लिए जीते हुए स्वयं को भुला देगा, तो उसकी क्षमता और ऊर्जा समाप्त हो जाएगी। इसलिए दोनों के बीच संतुलन बनाना ही सफलता का मार्ग है।

आज के आधुनिक युग में यह शिक्षा और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। प्रतिस्पर्धा, महत्वाकांक्षा और व्यक्तिगत उपलब्धियों की दौड़ में लोग अक्सर अपने हितों को सर्वोपरि मान लेते हैं। दूसरी ओर कुछ लोग दूसरों को खुश करने के प्रयास में अपनी आवश्यकताओं और सपनों की अनदेखी कर देते हैं। दोनों ही स्थितियां अंततः असंतोष और कठिनाइयों को जन्म देती हैं। एक सफल और संतुष्ट व्यक्ति वही होता है जो स्वयं का विकास करते हुए दूसरों के हितों का भी ध्यान रखे।

परिवार में माता-पिता इसका सर्वोत्तम उदाहरण हैं। वे अपने बच्चों के लिए अथक परिश्रम करते हैं, लेकिन यदि वे अपनी सेहत की पूरी तरह उपेक्षा कर दें, तो भविष्य में परिवार को ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। वहीं यदि वे केवल अपने आराम और इच्छाओं पर ध्यान दें, तो बच्चों का विकास प्रभावित हो सकता है। इसलिए समझदारी इसी में है कि वे दोनों जिम्मेदारियों को संतुलित रूप से निभाएं।

कार्यस्थल पर भी यही सिद्धांत लागू होता है। एक अच्छा अधिकारी अपने कर्मचारियों के हितों का ध्यान रखता है, लेकिन साथ ही संस्था के उद्देश्यों और अनुशासन को भी बनाए रखता है। वह किसी एक पक्ष के प्रति अत्यधिक झुकाव नहीं रखता। उसका उद्देश्य सभी के लिए बेहतर वातावरण बनाना होता है। यही संतुलित नेतृत्व की पहचान है। प्रकृति का प्रत्येक नियम भी संतुलन पर आधारित है। दिन और रात, धूप और वर्षा, गर्मी और सर्दी—सभी एक निश्चित संतुलन में कार्य करते हैं। यदि इनमें से कोई एक अत्यधिक बढ़ जाए, तो जीवन असंतुलित हो जाता है। इसी प्रकार मनुष्य के विचारों और निर्णयों में भी संतुलन आवश्यक है। संतुलन ही विवेक को जन्म देता है और विवेक ही बुद्धिमत्ता का आधार बनता है। इस प्रेरक प्रसंग का सार यही है कि सच्ची बुद्धिमत्ता केवल ज्ञान या चतुराई में नहीं, बल्कि संतुलित दृष्टिकोण में निहित होती है।

भारत को किस बड़े जंग के लिए तैयार कर रहा रूस? किसी का चैन गया, किसी का गला सूखा

वैश्विक हालात इस वक्त किसी चेसबोर्ड की तरह हैं, जहां भारत एक बार फिर से चेकमेट की तरफ है। यहां हर पल नए बदलाव हो रहे हैं, लेकिन भारत हर मोड़ पर खुद को बलवान साबित कर रहा है। एक तरफ ट्रंप भारत को टैरिफ वाली धमकी देते हैं। दूसरी तरफ व्लादिमीर पुतिन हैं जो भारत को सबसे एडवांस फाइटर जेट साथ बनाने का ऑफर दे रहे हैं। भारत अपनी स्वदेशी तकनीक और रक्षा बजट में भारी बदलाव कर रहा है। जिससे चीन और पाकिस्तान का गला अभी से सूख रहा है। दुनियाभर को आंख दिखाने वाले डोनाल्ड ट्रंप भारत के साथ डील करने की बातों को दोहरा रहे हैं। ऐसे में सवाल ये उठता है कि क्या डोनाल्ड ट्रंप का बारूदी पावर अब शिफ्ट हो रहा है। भारत को दी गई धमकी अब ट्रंप को महंगी पड़ने वाली है। क्या ट्रंप को ट्रेलर दिखने लगा है। क्या रूस भारत की दोस्ती अमेरिका को करारा जवाब देने की तैयारी कर रही है। स्ट्रैटजिक ऑटोनॉमी का ये अध्याय दुनिया को बता रहा है कि भारत किसी के दवाब में नहीं आता है। आज का एमआरआई इसी विषय पर करेंगे कि भारत कैसे मजबूत हो रहा है और अमेरिका भारत की तरफ डील को लेकर आंखें उठाकर देख रहा है। भारत और रूस के बीच रक्षा सहयोग की लंबी कहानी में अब एक नया अध्याय जुड़ सकता है। राष्ट्रपति व्लादमीर पुतिन ने भारत को एक लड़ाकू गिफ्ट देने की बात कही है। पुतिन ने एक बयान में कहा है कि वह भारत के साथ मिलकर सुखोई एसयू 57 को डेवलप करना चाहते हैं। एसयू 57 एक फिफ्थ जनरेशन का सेल फाइटर जेट है। प्रेसिडेंट पुतिन ने कहा है कि वो भारत के साथ मिलकर इसको डेवलप करना चाहते हैं। भारत और रूस ने मिलकर फिफ्थ जनरेशन फाइटर जेट प्रोग्राम की बात थी। स्टेल्थ फाइटर जेट होना था उसको डेवलप करने की बात हुई थी। 2017-18 के आसपास कुछ कारणों से बात नहीं बनी। भारत ने खुद को इस प्रोग्राम से अलग कर दिया। एसयू 57 वही प्रोग्राम का हिस्सा है। फरवरी 2025 में यह जेट भारत आया था। एरो इंडिया एयर शो में ये जेट आया था और उस समय भी बातें चली थी कि रूस ने कहा है कि हम आपको प्रोडक्शन देंगे। जैसे कि Sukhoi सु 30 के मामले में हम देखते हैं कि एक बहुत ही बढ़िया जेट है। भारत रूस में एसयू57 को लेकर पहली बार एरो इंडिया में ऑफर आया। इसके बाद भी कई बार यह खबरें आती रही। रूसी मीडिया आउटलेट से भी, भारतीय मीडिया और फॉरेन मीडिया कई सारे ने इसको रिपोर्ट किया कि रूस बार-बार हमें ऑफर कर रहा है बैक चैनल से, फ्रंट चैनल से और अब जाकर प्रेसिडेंट की तरफ से ऑफर आया है।

भारत और रूस के बीच पहली सुखोई डील 30 नवंबर 1996 को हुई थी। इस डील की कुल कीमत 1.462 बिलियन अमेरिकी डॉलर यानी उस समय के हिसाब से लगभग 7155 करोड़ थी। शुरू में 50 विमानों की डील हुई थी जिनमें 40 एसयू 30 के और 10 एसयू 30 एमकेआई शामिल था। यह डील रूस के साथ भारत की अब तक की सबसे बड़ी डिफेंस डील थी। शुरू में एसयू 30 के आया लेकिन बाद में भारत ने एसयू30 एमकेआई इंडिया स्पेसिफिक वर्जन की मांग कर दी। 1998 से 2000 के बीच सुखोई की पहली खेप भारत पहुंची। इस डील के बाद भारत ने कई फॉलो ऑन ऑर्डर दिए जिससे कुल संख्या 270 से ज्यादा हो गई। इस डील ने भारत रूस रक्षा संबंधों को नया आयाम दिया। पहले भारत मुख्य रूप से मिग 21 मिग 29 पर निर्भर था। एसयू 30 एमKI ने इंडियन एयरफोर्स को हैवी मल्टी रोल फाइटर कैपेबिलिटी दी। भारत के पास इस वक्त सुखोई के दो वर्जन हैं। पहला एसयू 30 एमKI यह भारत के लिए कस्टमाइज वर्जन है और दुनिया के सबसे कैपेबल ट्विन सीटर फाइटर्स में से एक है। हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड नासिक में इसका लाइसेंस प्रोडक्शन कर रहा है। दूसरा है सुपर Sukoi सुपर 30 यानी SQ30 का अपग्रेडेड वर्जन। इसके अंदर भारतीय विरुपक्षा रडार लगा है। साथ ही बेहतर रडार वार्निंग और डिजिटल सिस्टम लगा है। अपग्रेड करने का मुख्य लक्ष्य इसे 4.5 प्लस जनरेशन स्तर का बनाना और इसका जीवन 20 से 25 साल बढ़ाना था। भारत इस वक्त दुनिया भर में हथियारों के सबसे बड़े खरीदार में से एक है। गौरतलब है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पिछले साल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की व्हाइट हाउस यात्रा के दौरान भारत को F35 की पेशकश की थी। अब पुतिन के नए प्रस्ताव के बाद माना जा रहा है कि रूस इन पुरानी चिंताओं को दूर करने की कोशिश कर रहा है। पुतिन के इस ऑफर के ठीक बाद ट्रंप ने प्रधानमंत्री मोदी के लिए बड़ी बात कही और डोनाल्ड ट्रंप ने यह साफ कर दिया कि वो भारत से डील करने के लिए बेताब है। ट्रंप एक तरफ तो भारत के खिलाफ दबाव की रणनीति अपनाते हैं तो दूसरी तरफ पीएम मोदी की तारीफ कर मामले को बैलेंस करने की भी पूरी कोशिश करते हैं। लेकिन पुतिन भी एक मझे हुए राजनेता हैं और वो किसी भी कीमत पर अपने पुराने साथी भारत के साथ रिश्ते को कमजोर नहीं होने देना चाहते हैं। पुतिन ने अपने संबोधन के दौरान सुखोई डील की बात की। साथ ही भारत को लेकर कई और अहम बातें कही। राष्ट्रपति पुतिन ने कहा भारत एक मजबूत और स्वतंत्र देश है जो अपने राष्ट्रीय हितों के हिसाब से फैसला लेता है। दोनों देशों के रिश्ते दशकों पुराने हैं। कई कोशिशों के बावजूद यह रिश्ता लगातार मजबूत हुआ है। भारत का अपने हितों के मुताबिक दुनिया के अलग-अलग देशों के साथ संबंध विकसित करना स्वाभाविक है। भारतीयों की मेहनत और प्रतिभा के बदौलत भारत दुनिया की सबसे बड़ी और सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हुआ। पुतिन ने भारत की आर्थिक प्रगति का क्रेडिट पीएम मोदी को दिया। अनुमान है कि भारत रूस व्यापार आगे बढ़कर 100 अरब डॉलर तक पहुंच सकता है। व्लादमीर पुतिन की ये बातें और सुखोई 57 का ऑफर डोनाल्ड ट्रंप की चिंताओं को बढ़ाने के लिए काफी है। साथ ही यह बात भारत के दो पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान और चीन की बेचैनी को सातवें आसमान पर ले जाएंगी।

अभियान

हिमालय की गोद में जीवित है संजीवनी की स्मृति और अनोखी लोकआस्था

हिमालय को भारतीय सभ्यता और संस्कृति का शाश्वत प्रहरी कहा जाता है। हजारों वर्षों से यह केवल एक पर्वतमाला नहीं, बल्कि अध्यात्म, तपस्या, लोकविश्वास और धार्मिक परंपराओं का केंद्र रहा है। इसकी बर्फ से ढकी चोटियां, रहस्यमयी घाटियां, दुर्लभ वनस्पतियां और प्राचीन तीर्थस्थल भारतीय जनमानस में विशेष स्थान रखते हैं। हिमालय का नाम लेते ही मन में देवभूमि, ऋषियों की तपोभूमि और पौराणिक कथाओं की स्मृतियां जाग उठती हैं। यही कारण है कि हिमालय से जुड़ा प्रत्येक पर्वत, प्रत्येक नदी और प्रत्येक गांव अपने भीतर कोई न कोई ऐतिहासिक, धार्मिक अथवा सांस्कृतिक कथा समेटे हुए है। उत्तराखंड के चमोली जिले में स्थित द्रोणागिरी पर्वत और संजीवनी शिखर भी ऐसे ही अद्भुत स्थल हैं, जिनका संबंध रामायणकालीन घटनाओं, लोक आस्थाओं और रहस्यमयी वनस्पतियों से जोड़ा जाता है। भारतीय महाकाव्य रामायण में वर्णित एक प्रसंग के कारण द्रोणागिरी पर्वत का नाम पूरे देश में प्रसिद्ध है। मान्यता है कि लंका युद्ध के दौरान जब रावण के पुत्र मेघनाद ने लक्ष्मण पर शक्ति बाण का प्रहार किया, तब वे गंभीर रूप से घायल होकर मूर्छित हो गए थे। युद्धभूमि में उपस्थित वैद्य सुषेण ने भगवान राम को बताया कि लक्ष्मण के प्राण बचाने के लिए हिमालय में स्थित द्रोणागिरी पर्वत से संजीवनी बूटी लानी होगी। यह ऐसी दिव्य औषधि थी जो मृतप्राय व्यक्ति को भी जीवन प्रदान करने की क्षमता रखती थी। समय अत्यंत कम था और लक्ष्मण के प्राण संकट में थे। तब भगवान राम के आदेश पर हनुमानजी हिमालय की ओर प्रस्थान कर गए। कथा के अनुसार जब हनुमानजी द्रोणागिरी पर्वत पर पहुंचे, तो वहां असंख्य दुर्लभ और दिव्य औषधियां मौजूद थीं। उनमें से संजीवनी बूटी की सही पहचान कर पाना कठिन था। समय बीतता जा रहा था और युद्धभूमि में लक्ष्मण की स्थिति लगातार गंभीर हो रही थी। ऐसी परिस्थिति में हनुमानजी ने निर्णय लिया कि वे पूरा पर्वतखंड ही अपने साथ ले जाएंगे। उन्होंने द्रोणागिरी पर्वत का एक हिस्सा उखाड़ा और उसे लेकर लंका की ओर उड़ चले। उसी औषधि के प्रभाव से लक्ष्मण को पुनः जीवन मिला और राम की सेना का मनोबल लौट आया। यह प्रसंग भारतीय संस्कृति में त्याग, समर्पण और कर्तव्यनिष्ठा का अद्वितीय उदाहरण माना जाता है। स्थानीय जनश्रुतियों के अनुसार हनुमानजी जब पर्वतखंड लेकर लंका जा रहे थे, तब उन्होंने मार्ग में एक स्थान पर कुछ समय विश्राम किया था। वर्तमान में वही स्थान संजीवनी शिखर के नाम से प्रसिद्ध है। समुद्र तल से लगभग साढ़े दस हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित यह क्षेत्र प्राकृतिक सौंदर्य और आध्यात्मिक वातावरण का अनूठा संगम प्रस्तुत करता है। दूर-दूर तक फैले पर्वत, शीतल हवाएं, शांत वातावरण और देवभूमि की अनुभूति यहां आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को विशेष अनुभव प्रदान करती है। इस शिखर पर स्थित प्राचीन हनुमान मंदिर श्रद्धालुओं की गहरी आस्था का केंद्र है। माना जाता है कि यहां श्रद्धापूर्वक की गई प्रार्थना भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण करती है और जीवन के संकटों को दूर करने में सहायता प्रदान करती है। संजीवनी शिखर जितना श्रद्धा का केंद्र है, उतना ही रोचक द्रोणागिरी गांव का सांस्कृतिक पक्ष भी है। द्रोणागिरी पर्वत की तलहटी में बसा यह गांव अपनी अनूठी धार्मिक परंपराओं के कारण पूरे देश में अलग पहचान रखता है। यहां के निवासियों की मान्यताएं भारत के अन्य क्षेत्रों से कुछ भिन्न हैं। जहां अधिकांश स्थानों पर हनुमानजी को संकटमोचक और परम आराध्य माना जाता है, वहीं द्रोणागिरी गांव के लोग पर्वत देवता को अपना प्रमुख आराध्य मानते हैं। उनके अनुसार द्रोणागिरी पर्वत केवल एक पर्वत नहीं, बल्कि जीवनदायी शक्तियों और प्रकृति की दिव्य ऊर्जा का प्रतीक है। ग्रामीणों की मान्यता है कि जब हनुमानजी संजीवनी की खोज में यहां आए थे, तब वे पर्वतराज हिमालय की अनुमति लिए बिना पर्वत का एक हिस्सा अपने साथ ले गए थे। इससे पर्वत को क्षति पहुंची और उसका एक भाग वनस्पतिविहीन हो गया। स्थानीय लोककथाओं में कहा जाता है कि इस घटना से पर्वत देवता अप्रसन्न हुए थे। हालांकि हनुमानजी का उद्देश्य अत्यंत पवित्र था और उन्होंने लक्ष्मण के प्राण बचाने के लिए यह कार्य किया था, फिर भी पर्वत को हुई क्षति को यहां के लोग आज भी स्मरण करते हैं। यही कारण है कि द्रोणागिरी गांव में हनुमान पूजा की परंपरा नहीं है। इसके स्थान पर यहां पर्वत देवता की विशेष पूजा-अर्चना की जाती है। इस गांव की एक और विशेषता इसकी रामलीला परंपरा है। जहां देश के अधिकांश क्षेत्रों में रामलीला कई दिनों या सप्ताहों तक आयोजित होती है, वहीं द्रोणागिरी गांव में इसका मंचन केवल तीन दिनों तक किया जाता है। यह परंपरा वर्षों से चली आ रही है और स्थानीय सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा है। गांव के लोग अपनी लोक परंपराओं और धार्मिक मान्यताओं को आज भी पूरी श्रद्धा और निष्ठा के साथ निभाते हैं। यही कारण है कि यह छोटा-सा गांव सांस्कृतिक अध्ययन और लोकजीवन के शोधकर्ताओं के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

द्रोणागिरी पर्वत का महत्व केवल पौराणिक कथाओं तक सीमित नहीं है। यह क्षेत्र अपनी औषधीय संपदा के लिए भी प्रसिद्ध रहा है। आयुर्वेद और स्थानीय परंपराओं में द्रोणागिरी का उल्लेख दुर्लभ जड़ी-बूटियों के भंडार के रूप में मिलता है। यहां की ऊंचाई, जलवायु और जैव विविधता अनेक ऐसी वनस्पतियों के लिए अनुकूल मानी जाती है जिनका उपयोग परंपरागत चिकित्सा पद्धतियों में किया जाता रहा है। स्थानीय लोगों का विश्वास है कि आज भी इस क्षेत्र में अनेक ऐसी औषधियां मौजूद हैं जिनके गुणों का पूर्ण वैज्ञानिक अध्ययन अभी नहीं हो पाया है। यही कारण है कि समय-समय पर वनस्पति वैज्ञानिक और शोधकर्ता यहां आकर विभिन्न पौधों का अध्ययन करते रहते हैं।

द्रोणागिरी गांव से जुड़ी एक अत्यंत रोचक लोककथा भी सुनने को मिलती है। गांव के बुजुर्गों का कहना है कि हनुमानजी ने अपने कृत्य के प्रायश्चित स्वरूप वापस आने का वचन दिया था। स्थानीय लोगों के अनुसार वे आज भी समय-समय पर वानर रूप में यहां आते हैं। कुछ ग्रामीणों का दावा है कि उन्होंने ऐसे वानरों को देखा है जो सामान्य वानरों से भिन्न प्रतीत होते हैं और कुछ समय गांव के आसपास रहने के बाद अचानक लुप्त हो जाते हैं। यद्यपि इन कथाओं का कोई वैज्ञानिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है, लेकिन स्थानीय आस्था और लोकविश्वास में इनका महत्वपूर्ण स्थान है। यही लोककथाएं द्रोणागिरी की सांस्कृतिक विरासत को और अधिक रहस्यमय तथा आकर्षक बनाती हैं। हिमालयी क्षेत्रों में आस्था और प्रकृति का संबंध सदैव गहरा रहा है। यहां के लोग पर्वतों, नदियों, जंगलों और प्राकृतिक शक्तियों को देवस्वरूप मानते हैं। द्रोणागिरी और संजीवनी शिखर इस परंपरा के जीवंत उदाहरण हैं। यहां धर्म केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रकृति के प्रति सम्मान, संरक्षण और सहअस्तित्व की भावना से भी जुड़ा हुआ है। यही कारण है कि इन क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों को विशेष महत्व दिया जाता है और उन्हें सांस्कृतिक धरोहर के रूप में संरक्षित करने का प्रयास किया जाता है।

वर्तमान समय में संजीवनी शिखर और द्रोणागिरी पर्वत धार्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक अध्ययन और प्रकृति पर्यटन के महत्वपूर्ण केंद्र बन चुके हैं। हर वर्ष हजारों श्रद्धालु, पर्यटक, पर्वतारोही और शोधकर्ता यहां पहुंचते हैं। कोई रामायण से जुड़ी स्मृतियों को महसूस करने आता है, कोई हिमालय की अनुपम सुंदरता का आनंद लेने आता है, तो कोई दुर्लभ वनस्पतियों और स्थानीय परंपराओं का अध्ययन करने आता है।

PRGI NO. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HARDIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

सत्यमेव जयते
गुजरात सरकार

जिनके जीवन का हर पल, सेवा और राष्ट्रहित के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का प्रतीक है,
जिनके लिए जनकल्याण ही जीवन साधना है, ऐसे **सेवा-व्रती नरेन्द्र मोदी जी** के नेतृत्व में
भारत की निरंतर प्रगति का साक्षी परा देश कह रहा है

12 साल विश्वास के, विकास के, जनकल्याण के

» गरीब कल्याण

- **81+ करोड़** लोगों को प्रतिमाह **मुफ़्त राशन**
- **4+ करोड़ पीएम आवास, 10.5+ करोड़ उज्ज्वला गैस कनेक्शन** और **12+ करोड़ शौचालय** से जीवन हुआ आसान

» युवा शक्ति

- लगभग **2 करोड़** युवाओं को **स्किल ट्रेनिंग**
- **₹40 लाख करोड़** के **मुद्रा लोन**
- देशभर में **2.2 लाख स्टार्टअप्स**
- **10,000+ अटल टिंकरिंग लैब्स** से नवाचार को बढ़ावा

» किसान कल्याण

- **₹4.3 लाख करोड़** की पीएम किसान सम्मान निधि
- **4+ करोड़** किसानों को **₹2 लाख करोड़** का **फसल बीमा**
- **₹26+ लाख करोड़** की फसल खरीद **MSP** पर
- **8 करोड़** किसानों को **किसान क्रेडिट कार्ड**

» नारी शक्ति

- **32+ करोड़** महिलाओं के **जन-धन खाते** खुले
- सेना में महिलाओं को मिला **स्थायी कमीशन**
- **3+ करोड़ लखपति दीदी**
- **10 करोड़** ग्रामीण महिलाएं **91+ लाख सेल्फ हेल्प ग्रुप** के माध्यम से सशक्त

» स्वास्थ्य

- **70+** के बुजुर्गों को भी **₹5 लाख** का **मुफ़्त उपचार**
- **60+ करोड़** लोगों को **आयुष्मान भारत** की सुरक्षा
- देशभर में **19,000+ जन-औषधि केंद्रों** पर **90%** तक सस्ती दवाएं

» मिडिल क्लास

- **₹12.75 लाख** तक की वार्षिक आय **टैक्स फ्री**
- **UDAN** योजना के तहत **1.6+ करोड़** यात्रियों ने की किफ़ायती हवाई यात्रा
- **एमबीबीएस** सीटों की संख्या 151% बढ़कर करीब **1.3 लाख** हुई

» राष्ट्र निर्माण

- **26** शहरों में फैला **1,100+ किमी** का **मेट्रो नेटवर्क**
- देशभर में दौड़ रहीं **164 वंदे भारत ट्रेनें**
- अटल सेतु, सुदर्शन सेतु, चिनाब रेल ब्रिज, बोगीबील ब्रिज, पंबन समुद्री पुल जैसे **बड़े इन्फ्रास्ट्रक्चर का निर्माण**
- **एयरपोर्ट्स** की संख्या 74 से बढ़कर **164** हुई

» राष्ट्र प्रथम

- करीब **₹38,400 करोड़** का रिकॉर्ड **डिफेंस एक्सपोर्ट**
- **नक्सल मुक्त** भारत का सपना साकार, आतंकवाद पर हो रहा **कड़ा प्रहार**
- गुलामी की मानसिकता से मुक्ति - राजपथ बना **कर्तव्य पथ** और **छत्रपति शिवाजी महाराज** की **मुद्रा** से प्रेरित **नौसेना का नया ध्वज**

» विरासत और विकास

- अयोध्या में **भव्य राम मंदिर** का निर्माण
- काशी विश्वनाथ धाम, महाकाल महालोक और केदारनाथ धाम का **कायाकल्प**

गरीब कल्याण, युवाशक्ति और नारीशक्ति के सशक्तिकरण को केंद्र में रखकर देश को नई ऊँचाइयों तक ले जाने वाले ये **'12 वर्ष विश्वास के, विकास के और जनकल्याण के' आदरणीय प्रधानमंत्री जी की राष्ट्रहित** के प्रति अटूट प्रतिबद्धता, दूरदर्शी नेतृत्व और जनसेवा के संकल्प का सशक्त प्रतीक हैं। **- श्री हर्ष संघवी,** माननीय उपमुख्यमंत्री, गुजरात

गुजरात में 'विकास भी, विरासत भी' का विजन हुआ साकार

डिजिटल टेक्नोलॉजी के समन्वय से संग्रहालय कलाकृतियों के संग्रह स्थान के साथ साथ संस्कृति के जीवंत केंद्र भी बने डॉ. पंकज शर्मा, पुरातत्व और संग्रहालय निदेशक

▸▸ राज्य के संग्रहालयों में गत दो वर्षों में पहुंचे 16 लाख से अधिक आगंतुक
▸▸ गुजरात में पिछले एक दशक में बने 5 नए म्यूजियम

गांधीनगर : गुजरात में गत दो वर्षों में कुल 16 लाख से अधिक आगंतुक अलग-अलग संग्रहालयों यानी म्यूजियम को देखने के लिए पहुंचे। गुजरात सरकार के युवा सेवा और सांस्कृतिक गतिविधियां विभाग के अधीन कार्यरत पुरातत्व और संग्रहालय निदेशालय के निदेशक डॉ. पंकज शर्मा ने यह जानकारी दी और कहा कि बदलते समय के साथ डिजिटल टेक्नोलॉजी के समन्वय से म्यूजियम अब केवल कलाकृतियों के संग्रह स्थान नहीं, बल्कि संस्कृति के जीवंत केंद्र बन गए हैं। गत 12 वर्षों में गुजरात में अनेक म्यूजियम बनाए गए हैं, जिनमें कच्छ के भूकंप का सामना करने वाले कच्छियों की जीवटता और जज्बे को दर्शाने वाला 'स्मृतिवन', गांधी विचार की विरासत को जीवंत करने वाला 'दांडी कुटीर' और प्रधानमंत्री की जन्मभूमि वडनगर की सांस्कृतिक विरासत को उजागर करने वाला 'वडनगर पुरातत्व अनुभवात्मक संग्रहालय' शामिल है।

समय के अनुरूप संग्रहालयों का स्वरूप भी बदला है। आज, गुजरात के संग्रहालय केवल कलाकृति के संग्रह स्थान ही नहीं रहे, वे इंटरैक्टिव और डिजिटल लर्निंग के वैश्विक केंद्र बन गए हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 12 वर्षों के दौरान, गुजरात सरकार ने देश में 'विकास भी, विरासत भी' के मंत्र को चरितार्थ किया है। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व और उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी के मार्गदर्शन में गुजरात ने आर्थिक विकास के साथ-साथ ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करके नई पीढ़ी को अपनी प्राचीन विरासत से वाकिफ कराया है।

परंपरा से टेक्नोलॉजी तक, समय के साथ बदलता म्यूजियम का स्वरूप

अतीत में म्यूजियम को केवल कांच के शो-केस में रखी पुरानी मूर्तियां या सिक्के देखने का स्थान माना जाता था। लेकिन गत 12 वर्षों में गुजरात सरकार ने इस परिभाषा को बदल दिया है। आज राज्य के संग्रहालयों में एआर और वीआर (ऑगमेंटेड रियलिटी और वर्चुअल रियलिटी), 3डी प्रोजेक्शन मैपिंग, होलोग्राम और इंटरेक्टिव टच स्क्रीन जैसी अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग किया जा रहा है, ताकि युवा पीढ़ी अपनी विरासत को केवल देखे ही नहीं, बल्कि अनुभव भी कर सके।

गत 12 वर्षों में संग्रहालयों ने गुजरात की विरासत को वैश्विक पटल पर रखा

स्मृतिवन भूकंप स्मारक और म्यूजियम (भुज) : 2001 में आए विनाशकारी भूकंप में जान गंवाने वाले लोगों की स्मृति में बना यह म्यूजियम भारत का सबसे आधुनिक टेक्नोलॉजी वाला म्यूजियम है, जहां आगंतुक सिम्युलेटर के जरिए भूकंप का जीवंत अनुभव कर सकते हैं।

स्मृतिवन केवल म्यूजियम नहीं, एक जीवंत अनुभूति है

भुज के भुजिया डुंगर (पहाड़ी) पर बना स्मृति वन भूकंप स्मारक और म्यूजियम आज केवल गुजरात या भारत नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर आकर्षण का केंद्र बन गया है। स्मृतिवन पहुंचे आगंतुकों ने इस म्यूजियम को प्राकृतिक आपदा के खिलाफ जीवटता से दोबारा खड़े होने की गुजरात के जज्बे का प्रतीक बताया है।

म्यूजियम के अंदर बनाए गए थियेटर और डिजिटल माध्यमों के बारे में बात करते हुए पर्यटकों ने बताया कि यहां आकर 2001 के उस भयानक भूकंप का वास्तविक अनुभव होता है। भूकंप के दौरान लोगों पर क्या बीती होगी और उसके बाद कैसे पूरा गुजरात इस विभीषिका से उबरकर खड़ा हुआ दोबारा पटरी पर लौटा, इसकी प्रेरक गाथा आगंतुकों की आंखें नम कर देती है।

दांडी कुटीर : बापू के आदर्शों की अनुभूति

गांधीनगर में वर्ष 2015 में बना दांडी कुटीर म्यूजियम महात्मा गांधी के जीवन और विचारों को आधुनिक तकनीक के जरिए लोगों तक पहुंचाता है। यह 41 मीटर ऊंचा शंकु आकार का गुंबद है, जो नमक के ढेर का प्रतीक है। दांडी कुटीर वर्ष 1930 में महात्मा गांधी जी द्वारा किए गए नमक सत्याग्रह का प्रतीक है।

दांडी कुटीर में प्रकाश, ध्वनि, एनिमेशन और मल्टीमीडिया प्रेजेंटेशन के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन की गाथा को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया गया है। दांडी कुटीर ने साबित किया है कि म्यूजियम केवल प्रदर्शन का केंद्र नहीं, बल्कि प्रेरणा का माध्यम भी बन सकता है।

वडनगर का पुरातात्विक म्यूजियम :

वर्ष 2025 में निर्मित यह म्यूजियम वडनगर के हजारों वर्ष प्राचीन इतिहास और उत्खनन के दौरान मिले पुरातात्विक अवशेषों को जीवंत रखने के लिए बनाया गया है। यह भारत में अपनी तरह का पहला म्यूजियम है, जो उत्खनन स्थल के अनुभव और उत्खनन के दौरान मिले अवशेषों को प्रदर्शित करता है।

इस अत्याधुनिक पुरातात्विक म्यूजियम में ऑगमेंटेड रियलिटी-वर्चुअल रियलिटी, 3डी डिस्प्ले, प्रतिकृति और डायोरामा जैसी इमर्सिव टेक्नोलॉजी का उपयोग किया गया है। यह स्थल आंतरिक अवलोकन के जरिए 2500 वर्षों के सात सांस्कृतिक चरणों के कालक्रमिक विकास का अद्वितीय अनुभव और समझ देता है।

लोथल में राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर (निर्माणाधीन) :

भारत की प्राचीन समुद्री शक्ति और सिंधु घाटी सभ्यता की विरासत को उजागर करने वाले इस अंतरराष्ट्रीय स्तर के प्रोजेक्ट का काम तेजी से चल रहा है। लोथल में निर्माणाधीन राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर दुनिया का सबसे बड़ा मैरीटाइम म्यूजियम होगा। दुनिया की सबसे प्राचीन शहरी सभ्यताओं में से एक सिंधु घाटी सभ्यता के एक अहम बंदरगाह शहर के रूप में जाना जाने वाला लोथल आज एक बार फिर वैश्विक आकर्षण का केंद्र बन रहा है। लोथल समुद्री विरासत परिसर केवल एक म्यूजियम नहीं, बल्कि भारत के समृद्ध समुद्री इतिहास और वैश्विक व्यापार परंपरा को दुनिया के समक्ष पेश करने वाला एक भव्य सांस्कृतिक केंद्र होगा।

जहां परंपरागत म्यूजियमों में केवल वस्तुओं का प्रदर्शन किया जाता है, वहीं लोथल में आगंतुकों को हजारों वर्ष प्राचीन बंदरगाह शहर की जीवंत अनुभूति कराने का प्रयास किया जा रहा है। अत्याधुनिक डिजिटल टेक्नोलॉजी, इमर्सिव गैलरियां, वर्चुअल प्रेजेंटेशन, समुद्री व्यापार के मॉडल और इंटरैक्टिव प्रदर्शनी के जरिए आगंतुक प्राचीन भारत के वैश्विक व्यापार और नौकायन कौशल को निकट से देख और समझ पाएंगे।

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी और म्यूजियम (केवड़िया) :

दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा के साथ सरदार वल्लभभाई पटेल के जीवन और तत्कालीन भारत की रियासतों के विलय के इतिहास को दिखाने वाला यह अत्याधुनिक म्यूजियम 'विकास भी, विरासत भी' के विजन का शानदार उदाहरण है।

गुजरात सरकार आने वाले समय में भी राज्य की अस्मिता, संस्कृति और इतिहास को वैश्विक फलक पर ले जाने तथा नई पीढ़ी में अपनी भव्य विरासत के प्रति गौरव का भाव पैदा करने के लिए ऐसे ही आधुनिक प्रकल्पों का निर्माण करने के लिए प्रतिबद्ध है।

विश्व पर्यावरण दिवस पर बाल मंदिर व कीड्स हट स्कूल में वृक्षारोपण एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा श्रीमती शालिनी वर्मा के मार्गदर्शन में बाल मंदिर व कीड्स हट स्कूल में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर विशेष पर्यावरण जागरूकता एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर अध्यक्षा श्रीमती शालिनी वर्मा ने विद्यार्थियों एवं उपस्थित जनों को संबोधित करते हुए कहा कि पर्यावरण संरक्षण आज समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। यदि हमें अपनी धरती को स्वच्छ, सुंदर एवं हरित बनाए रखना है, तो अधिक से अधिक वृक्षारोपण करना होगा तथा लगाए गए पौधों की नियमित देखभाल भी सुनिश्चित करनी होगी। उन्होंने सभी को पर्यावरण संरक्षण का संकल्प दिलाते हुए प्रत्येक व्यक्ति से कम से कम एक पौधा लगाने और उसके संरक्षण का आह्वान किया।

कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने पर्यावरण संरक्षण विषयक विभिन्न गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग लिया। वृक्षारोपण के माध्यम से बच्चों को प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का बोध कराया गया तथा हरित वातावरण के महत्व के बारे में जानकारी दी गई।

इस अवसर पर पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की उपाध्यक्षा श्रीमती शिखा शर्मा, सचिव श्रीमती ममता सिंह सहित संगठन की अन्य सदस्याएं, विद्यालय के शिक्षकगण एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बच्चों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता विकसित करना तथा स्वच्छ, हरित एवं सतत् पर्यावरण के निर्माण के लिए उन्हें प्रेरित करना था।

विश्व पर्यावरण दिवस पर पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की हरित पहल,पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने हेतु औषधीय पौधों का वितरण

पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन (WRWWO) द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस की भावना को साकार करते हुए 8 जून, 2026 को अंधेरी रेलवे कॉलोनी में जागरूकता एवं वृक्षारोपण संबंधी विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस वृक्षारोपण अभियान का नेतृत्व संगठन की अध्यक्षा श्रीमती सुजाता पाण्डेय ने कार्यकारिणी समिति की सदस्याओं के साथ किया।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, श्रीमती सुजाता पाण्डेय एवं कार्यकारिणी समिति की सदस्याओं द्वारा नीम, सहजन (मोरिंगा) तथा आंवला जैसे औषधीय पौधों से युक्त एक 'आरोग्य वाटिका' की स्थापना की गई। इस पहल का उद्देश्य दैनिक जीवन में औषधीय पौधों के महत्व को रेखांकित करने के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण के प्रति जन-जागरूकता को बढ़ावा देना है।

इस अवसर पर श्रीमती पाण्डेय ने रेल कर्मचारियों, उनके परिजनों तथा सामाजिक कल्याण केंद्र में उपस्थित बच्चों से संवाद किया। केंद्र की सदस्याओं ने वर्षभर संचालित विभिन्न कल्याणकारी एवं सामुदायिक विकास गतिविधियों, जैसे राष्ट्रीय पर्वों के आयोजन, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा स्वास्थ्य जागरूकता अभियानों आदि की जानकारी प्रस्तुत की।

श्रीमती पाण्डेय ने रेलवे कॉलोनी में स्वच्छ एवं हरित वातावरण बनाए रखने के लिए वहां के निवासियों के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण में सामूहिक सहभागिता तथा पर्यावरण के प्रति उत्तरदायी समुदायों के निर्माण के महत्व पर बल दिया। घरेलू बागवानी को प्रोत्साहित करने तथा औषधीय पौधों के उपयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कॉलोनीवासियों को नींबू, लेमनग्रास, कड़ी पत्ता एवं पान के पौधों सहित विभिन्न पौधे एवं गमले वितरित किए गए। इस पहल का उद्देश्य परिवारों को अपने घरों में उपयोगी पौधे उगाने तथा पर्यावरण-अनुकूल जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना था। यह कार्यक्रम घर-घर में औषधीय पौधे लगाने के पर्यावरणीय एवं स्वास्थ्य संबंधी लाभों के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाने का एक

गुजरात सरकार
सत्यमेव जयते

विश्वास, विकास और जनकल्याण के 12 वर्ष

गुजरात सरकार द्वारा अनुसूचित जनजाति (ST) प्रमाण पत्र प्राप्त करने की प्रक्रिया को पूरी तरह से डिजिटल बना दिया गया है। नागरिक अब घर बैठे 'डिजिटल गुजरात पोर्टल' के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं और स्वीकृति मिलने के बाद अपना प्रमाण पत्र सीधे डिजिटल माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।

अनुसूचित जनजाति (ST)
प्रमाण पत्र
अब घर बैठे ऑनलाइन

ST प्रमाण पत्र ऑनलाइन कैसे प्राप्त करें?
जानें पूरी प्रक्रिया...

ऑनलाइन आवेदन करने की प्रक्रिया

> पोर्टल पर जाएँ: सबसे पहले आधिकारिक वेबसाइट www.digitalgujarat.gov.in पर जाएँ और वहां 'नागरिक सेवाएं' (Citizen Services) का विकल्प चुनें।

> सही सेवा का चयन करें: सेवाओं की सूची में से अनुक्रम संख्या 33 (जाति ST प्रमाण पत्र - सुगम) पर क्लिक करें।

> घर बैठे फॉर्म भरें: किसी भी सरकारी कार्यालय में जाए बिना, ऑनलाइन माध्यम से सीधे ही फॉर्म भरा जा सकेगा।

> दस्तावेज अपलोड करें: गुजरात अनुसूचित जनजाति (प्रमाण पत्र जारी करने और उसकी सत्यता की जांच का विनियमन करने संबंधी) नियम-2020 के "प्रपत्र-क" के अनुसार आवश्यक सहायक दस्तावेज अपलोड करने के लिए तैयार रखें।

सेवा की विशेषताएँ और लाभ

> डिजिटल माध्यम से प्रमाण पत्र की प्राप्ति: आवेदन स्वीकृत होने के बाद प्रमाण पत्र सीधे आपके व्हाट्सएप या ई-मेल पर भेज दिया जाएगा।

> गुजराती और अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध: लाभार्थियों की सुविधा के लिए यह प्रमाण पत्र दो भाषाओं में उपलब्ध है।

> सेवा की शुरूआत: यह आधुनिक डिजिटल सेवा पूरे गुजरात में दिनांक 24/03/2026 से उपलब्ध करा दी गई है।

डिजिटल माध्यम से घर बैठे ST प्रमाण पत्र की प्राप्ति, समाज में अंतिम छोर के व्यक्ति के सशक्तिकरण और 'विकसित गुजरात' के संकल्प को साकार करने की दिशा में एक मजबूत कदम है।
- श्री हर्ष संघवी, उपमुख्यमंत्री, गुजरात

विकसित भारत, विकसित गुजरात...